VISION IAS

www.visionias.in

01 AUG 2022

SUBJECT:	ESSAY-2	Test Code:	2	1	2	2
Name of Candidate	BAJRANG PRASAD					
Medium Hindi/Eng.	HINDI	Registration Number	5 7 8 2 9 2			
Center	MN	Date	01-08-22			

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

SECTION-A

यदि आप शांति चाहते हैं, तो युद्ध के लिए तैयार रहें।

सिद्धार्थ अपने बचपन की अवस्था में ही इस संसार में होने वाले भौतिक परिवर्तन, जीवन की नश्वरता से काफी विचलित थे। वह इस संसार में शान्ति में चाहते थे, एक ऐसी शांति जो न केवल स्थायी हो बल्कि प्रसन्नता से युक्त जिसमें इस संसार के दुःखों की व्याप्ति लेशमात्र भी न हो। इसके लिए वह मात्र 32 वर्ष की आयु में घर से बाहर निकल गए एवं ज्ञान की खोज में उन्होने काफी वर्ष एकांतवास में बिताया। उसके बाद उन्होने ज्ञान प्राप्त किया एवं 'बोधिसत्व' कहलाये उनको जो प्राप्ति हुई उन्होने उसका सार बताया कि यह शांति

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

और कुछ नहीं बल्कि तृष्णा की कारण इन्द्रियों पर विजय है। यदि हम शान्ति चाहते हैं तो हमें इन्द्रियों से युद्ध के लिए तैयार रहना होगा एवं उनकी पराजय/शिकस्त ही शांति की स्थापक होगी।

युद्ध के शब्द का अभिप्राय होता है - 'अशांतकारी तत्वों के विनाश के लिए किया जाता वाला कर्म'। यह कार्य हिंसक भी हो सकता है और अहिंसक भी। यह बाह्य भी हो सकता है आन्तरिक भी। यह दृश्य भी हो सकता है, अदृश्य भी। इसका क्षेत्र विस्तृत हो सकता, संकीर्ण भी।

इसके विभिन्न प्रकार्यों की विवेचना पर हम पाते हैं हिंसक युद्ध द्वारा शांति की स्थापना संकीर्ण प्रकार की है। अगर व्यक्ति का उद्देश्य अनैतिक है एवं उसका स्वार्थ सन्निहित है कर्तव्य के पीछे - तो

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हिंसक जनित शांति स्थापना और भी विध्वंसक हो सकती है। इसका हमारे समक्ष उदाहरण है- भारत का स्वतंत्रता संग्राम- जहाँ अंग्रेजों अपने उपनिवेशवादी हितों की पूर्ति हेतु शोषणजनित शांति स्थापित करनी चाही लेकिन साध्य एवं साधन के बीच का यह अनैतिक अन्तराल हमेशा भारतीयों में स्वतंत्रता की अलख जगाता रहा।

इसके प्रभाव एवं आयामों की विवेचन हेतु हमें इसके सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय, विज्ञान व तकनीकी, अन्तर्राष्ट्रीय, मानसिक, आर्थिक आदि स्तरों पर ध्यान देना होगा।

सामाजिक स्तर पर शांति में व्यवधान करने वाले कारण हैं:- भूख, निर्धनता, अशिक्षा, स्वास्थ्य आदि मूलभूत आवश्यकताओं जनित असमानता एवं

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इससे जनित विद्रोह, हिंसा एवं संघर्ष।
अफ्रीका के अधिकांश देश इस मूलभूत आवश्यकताओं जनित युद्ध एवं गृहयुद्ध के शिकार हों। इस व्यवस्था में शांति लाने हेतु हमें इन मानवीय लालच, लोभ, अहंकार, स्वार्थ आदि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना होगा तभी सामाजिक न्याय सुनिश्चित होगा।

राजनीतिक स्तर पर भी यह अशांति बरकरार है। सरकार में वर्गों का असमान प्रतिनिधित्व; लाभ का निश्चित लोगों तक ही पहुँचना, सरकारी मशीनरियों का अपने हितों के अनुरूप उपयोग आदि अशांति एवं निरंतर आंदोलन का कारण रहे हैं। वर्तमान में श्रीलंका संकट, इथियोपिया संकट इस प्रकार के अस्थिरता के उदाहरण है इसके निवारण एवं शांति स्थापना हेतु अहंकार, परिवारवाद, एकदलीय राजनीति, तानाशाही आदि

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

शत्रुओं से युद्ध के लिए तैयार रहना होगा।

आज दुनिया अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद की समस्या से जूझ रही है। जिसमें अधिकांशत: इस्लामोफोबिया जनित बुल्क गैंग हमला, सिर कलम, फिदायीन हमला, सामूहिक नरसंहार आदि धार्मिक कट्टरता प्रमुख है। इन अबोध युवाओं को बहकाने वाले कट्टरपंथी तत्वों, धर्म के तथाकथित प्रमुखों एवं उनकी साम्प्रदायिक शिक्षाओं से लड़ने के लिए तैयार रहना होगी तभी शांति सुनिश्चित होगी।

आर्थिक स्तर में जीवन स्तर में भारी अन्तराल, व्यवधान एवं असमानताएँ अधिकांश वैश्विक आबादी को मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित रखी है जिनसे समाज में कमजोर वर्गों में उच्च लोगों के प्रति ईर्ष्या जनित अशांति बनी है। इनके निराकरण हेतु हैमरचोर्ड

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

कर वंचन, धन शोधन, एकाधिकार, कानूनी प्रावधानों का दुरुपयोग आदि के खिलाफ कानूनी, नैतिक स्तर पर लड़ाई हेतु तैयार रहना होगा।

आज दुनिया मानव की अति जिज्ञासु एवं 'अहं ब्रह्मास्मि' किस्म की इच्छाओं का परिणाम जलवायु परिवर्तन के रूप में देख रही है। यह उपभोक्तावादी मानसिकता से लड़ने हेतु हमें सामूहिक स्तर पर लड़ाई लड़नी होगी।

आज सम्प्रभु राष्ट्रों के समक्ष प्रमुख चुनौती उनकी सीमाओं की अन्य प्राधिकारवादी (?) ताकतों से रक्षा से है। वर्तमान में रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण शांति प्रक्रिया में खलल डाल रहा है। ऐसी प्रवृत्ति पुनः राष्ट्रों के मध्य विनाशकारी हथियारों की खतरनाक प्रतिस्पर्धा को बढ़ायेगी।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस प्रकार हमारे समक्ष मौजूद चुनौतियों ने हमें आन्तरिक एवं बाह्य स्तर पर शांति की चाहत के लिए हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहने को अनिवार्य कर दिया है।

आज दुनिया में विचारधारा की लड़ाई भी शांति को प्रतिस्पर्धी बना दी है। समाजवाद की पूँजीवाद से लड़ाई, लोकतांत्रिक व्यवस्था की तानाशाही व्यवस्था से, बाजारवाद का सार्वजनिक विकास से आदि ने विभिन्न गुटों का निर्माण किया है।

इन गुट समर्थक देश एक-दूसरे के प्रति विचारधारा जनित परिणाम के रूप में अपने को वैश्विक शक्ति का नेता बनने की होड़ में लगे हैं। जैसे- लोकतांत्रिक प्रणाली की हिमायत करता अमेरिका व समाजवाद के माडल में विकास का पर्याय बना चीन।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस विचारधारा जनित लड़ाई ने कल्याण के लिए गठित वैश्विक संस्थानों (संयुक्त राष्ट्र, यूनिसेफ आदि) को भी पक्षपात का शिकार बना दिया है। हमें मानवता को केन्द्र में रखकर इस विभाजनकारी सिद्धान्तों से लड़ना होगा।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने वैश्विक शांति हेतु 'व्यक्ति के आन्तरिक शांति' की विशेषता को रेखांकित किया है। यह आन्तरिक शत्रु व्यक्ति को अस्थिर कर देते हैं। जिससे लोभ, अहंकार, क्रोध, अहं के कारण समाज और अन्ततः विश्व अशान्त हो जाता है।

मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने 'विश्व में कहीं भी हो रहे अन्याय को पूरी दुनिया में न्याय के लिए खतरा' माना है। इस लिए इस अन्याय की समाप्ति एवं शांति की

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्थापना हेतु युद्ध अनिवार्य ही है।

कलिंग युद्ध की विभीषिका से प्रभावित होकर सम्राट अशोक ने निर्वेद का मार्ग धारण किया और उसने शांति की स्थापना का सबसे बड़ा उपाय आन्तरिक शांति को ही माना। परन्तु इस समाधि शांति की स्थापना हेतु हमें आन्तरिक शत्रुओं से युद्ध करना होगा जिसके लिए दृढ़ निश्चय, प्रतिबद्धता, एकाग्रता, 'संतोष परं सुखं' जैसे गुणों के होने की अनिवार्यता है।

भारतवर्ष आज साम्प्रदायिकता, ईशनिंदा (जयपुर हिंसा), भ्रष्टाचार, नक्सलवाद (सुकमा कांड – CRPF जवान शहीद), घृणास्पद बयानबाजी (हेट स्पीच) आदि जैसे ज्वलंत मुद्दों का सामना कर रहा है। इन समस्याओं से निपटने हेतु हमें विधिक हथियारों के साथ नैतिक हथियारों का उपयोग समीचीन होगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस वैज्ञानिक युग ने युद्ध को भौतिक जगत में विस्तार कर दिया है। आज विज्ञान जहाँ वरदान वहीं अभिशाप भी इसके दुरुपयोग के कारण बनता जा रहा है। आज डार्क वेब के द्वारा ड्रग-तस्करी, अश्लील बाल पोर्न अपराधों के वीडियो, मानव तस्करी, आतंकवाद, धनशोधन आदि को संचालित किया जा रहे है। इन मुद्दों के निवारण में विज्ञान, सदाचार का उपयोग ही इस लड़ाई में सफलता की पूर्वापेक्षा होगी।

आज सामरिक चुनौतियाँ राष्ट्रों को असुरक्षित करती जा रही है। जून-2020 में गलवाँ घाटी में चीनी मुठभेड़, नाथूला | डोकलाम विवाद आदि चीनी आधिकारवादी नीति भारत को तैयार रहने हेतु सजग किया है। आज हम हथियारों, सैन्य क्षमताओं, कुशल सेनाओं आदि स्तरों पर युद्ध को मजबूत कर रहे है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आज वित्तीय स्तर पर मँहगाई, रुपये का मूल्य ह्रास, FPI निकासी ने अनेक राष्ट्रों में राजनैतिक अस्थिरता को जन्म दिया है। श्रीलंका में सरकार का पदच्युत होना इसका ज्वलंत उदाहरण है। इन चुनौतियों में राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनने एवं निर्भरता कम करने हेतु पुरुस्तर पर अवसंरचना निर्माण को प्रेरित किया है जो शांति के लिए जरुरी है।

मिसाइल मैन 'डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम' ने भ्रष्टाचार को विकास का सबसे बड़ा शत्रु माना है। इन्होंने इसे उस दीमक की संज्ञा दी है जो राष्ट्र रुपी मजबूत चन्दन के वृक्ष को भी अशः धीरे-धीरे खाकर खत्म कर देगा।

इस शत्रु के खिलाफ हमें बहुस्तरीय लड़ाई पड़ेगी। प्रशासन में अनैतिक कर्मचारी रुपी शत्रु एवं बलवती स्वार्थपरक इच्छाओं के दमन हेतु सामूहिक लड़ाई की जरुरत है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस शांति स्थापना के क्रम हम युद्ध की तैयारियों को देखें तो हमने मंजिल की तरफ काफी सजगता एवं समग्रता से संधान कर दिया है। वैश्विक एवं राष्ट्रीय स्तर विद्यमान अनेकों संधि | अभिसमय, प्रोटोकाल, विधि, संस्थाएँ, गैर-सरकारी संगठन आदि इस दिशा में प्रमुख हथियार है।

सामाजिक अशांति के विरुद्ध एवं सामाजिक क्रांति हेतु भारत ने pm-आयुष्मान योजना, मातृत्व वंदना योजना, नई शिक्षा नीति-2020, दिव्यांगजनों एवं वृद्ध जनों हेतु योजनाएँ, पेंशन योजना आदि व्यवस्थाएँ सुनिश्चित की है।

राजनैतिक स्तर पर आरक्षण (SC/ST/OBC/महिला), प्रमोशन, उद्यमिता को बढ़ावा, विकेन्द्रीकरण आदि द्वारा हम विकास सुनिश्चित कर रहे हैं।

आर्थिक अन्याय एवं असमानता जनित अशांति से निपटने हेतु हमने आर्थिक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

संसाधनों के सकुशल बँटवारे हेतु PM-किसान, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, डिजिटलीकरण, PM गतिशक्ति, आत्मनिर्भर भारत, NIP, SEZ, NIMZ, मेक-इन-इंडिया, वोकल फार लोकल आदि कार्रवाई कर रहे हैं।

रक्षा सुरक्षा के लिए रक्षा अनुसंधान, अंतरिक्ष विकास, अग्निपथ योजना, रक्षा नीति आदि बदलावों को करते हुए लड़ाई हेतु स्वयं को मजबूत बनाया जा रहा है।

इस शांति की स्थापना में मानवेत्तर प्राणियों की सुरक्षा महत्वपूर्ण होगी। हमें पूरे पृथ्वी को एक पारितंत्र मानना होगा एवं इसके किसी भी प्रकार के विनाश, अस्थिरता को बढ़ाने वाले कारक के विरुद्ध सामूहिक लड़ाई लड़ना होगा। मानव कल्याण की अवधारणा को सर्वोपरि रखते हुए विश्व को मानवता

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के एक सूत्र में पिरोने का प्रयास ही शांति की स्थापना करेगा। युद्ध हमेशा मानव की अस्तित्व की परीक्षा हेतु अनिवार्य रहा है और यह अनिवार्य रहेगा, बशर्ते केवल एक जरूरत है कि वह युद्ध केवल शत्रुओं (आंतरिक या बाह्य) के खिलाफ होना चाहिए न कि शांति के स्थापक कारकों के विरुद्ध। 'कुरुक्षेत्र' में राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं—

"शांति नहीं तब तक जब तक,
सुख भाग न नर का सम हो।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो
नहीं किसी को कम हो।"

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

SECTION - B

एक स्व जो निरन्तर परिवर्तित होता है, वह स्व अस्तित्व में बना रहता है।

'एक ऐसी चीज जो अनादि से अनन्त तक एक मात्र सत्य के रूप में निरन्तर अस्तित्वमान बनी रही वह अमूर्त अद्वितीय वस्तु है— परिवर्तन।'

परिवर्तन इस दुनिया में अपरिहार्य है। बिना परिवर्तन के कोई चीज दीर्घकालिक रूप से इस संसार में अस्तित्वमान रह ही नहीं सकती। डार्विन का 'प्राकृतिक वरण का सिद्धांत' भी कहता है कि डायनासोर इस दुनिया से इसलिए समाप्त हो गए क्योंकि उन्होंने बदलाव कों के प्रति स्वयं को अनुकूलित नहीं किया। जिन्होंने अनुकूलन का गुण सीखा वह इस दुनिया में बने रहे।

मानव को इस संसार में सबसे बुद्धिमान सामाजिक प्राणी माना गया है क्योंकि वह एक तो दूसरी बदलती अवस्थाओं के साथ बदलना जानता है तो अन्य रूप में स्वयं के अनुसार स्थितियों को परिवर्तन करने का भी अद्भुत गुण रहता है।

परिवर्तन की इस अपरिहार्य प्रकृति के संबंध में हम दुनिया में अनेकों उदाहरण देखते हैं जो हमें इतिहास, वर्तमान एवं भविष्य के सन्दर्भ में प्रतिबिम्ब उपलब्ध कराती हैं।

~~ऐतिहासिक~~ अगर हम परिवर्तन के स्वरूपों को देखें तो यह तीन प्रकार से समझा जा सकता है-

- एक वह स्थिति जिस पर प्रकृति का परिवर्तन स्वयं भारी पड़ गया — प्राचीन विश्व की सभ्यताएँ, हड़प्पा / सिंधु, मिस्र आदि

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

- दूसरी वह स्थिति जिसमें प्रकृति के साथ परिवर्तन ने ही संपूर्ण मानव एवं समस्त प्राणियों को अनुकूलित होने के लिए विवश किया। जैसे - पृथ्वी पर हिम युग, बाद में लगातार तापमान का बढ़ना एवं घटने की प्रक्रिया
- तीसरी स्थिति - यह मानव प्राणियों की नवाचारी क्षमता को प्रदर्शित करता है जिन्होंने अपने विवेक एवं विज्ञान क्षमता का उपयोग करते स्वतः कृत्रिम वातावरण एवं प्रकृति का सीमित विकल्प ढूंढ निकाला है। जैसे - भविष्य में चन्द्रमा, मंगल पर बसने की योजना; प्रकृति का मानवीकरण (आइसलैंड पर भी अनुकूलित तापमान बनाए रखते हुए निवास)

हमारे लिए महत्वपूर्ण प्रासंगिक विषय है कि परिवर्तन के साथ स्वयं को परिवर्तित करने की प्रासंगिकता।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बदलने की प्रकृति व्यक्ति को रूढ़िवादी नहीं बनने देती। वह हमेशा नए प्रगतिशील विचारों के प्रति ग्रहणशील रहता है। जैसे- यूरोप में आधुनिक विचारों के प्रथम आगमन का कारण उनकी प्रगतिशील विचार ग्रहण करने की प्रगतिव प्रवृत्ति।

भारतवर्ष को अपने धार्मिक एवं सांस्कृतिक आधारों पर रूढ़िवादिता का सामना करना पड़ा, जिसका प्रभाव यह हुआ कि हम नवाचार में पिछड़ते गए। साथ ही भारत पिछड़ी संस्कृति के विकृति स्वरूपों का भार ढोता रहा जिससे सामाजिक प्रगति प्रभावित हुई। जैसे- सती प्रथा, छुआछूत, वर्णव्यवस्था, आडंबर आदि कुप्रथाओं का प्रचलन।

मानव अधिकारों को महत्ता देने एवं व्यक्तिगत की अवधारणा व्यक्ति के परिवर्तित परिस्थितियों के प्रति

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अनुकूलित होने का परिणाम है। आज जिन राष्ट्रों ने इन आधुनिक विचारों को महत्व न देकर स्वयं को सामंती व्यवस्था में ही बाँध रखा है आज वह पिछड़ेपन, तानाशाही, अत्याचार के पर्याय बन चुके हैं। जैसे- तालिबान शासन की कार्रवाई, सीरिया-ईराक जैसे देशों में शासन व्यवस्था।

आज की राजनैतिक संरचना भी बदलाव की माँग कर रही है जो युग के अनुरूप हो। भारत ने स्वतंत्रता के समय संघीय प्रणाली को अपनाकर जो राजनैतिक सशक्तीकरण की राह खोली वह आज तक स्थिर-जवाबदेह सरकार देने में सक्षम हुई है।

पहले आर्थिक प्रणालियाँ प्रायः जमींदारों, सामंतों आदि के अनुसार स्थापित थीं एवं समाज पर उनका नियंत्रण काफी था। बदलते संसाधन वितरण के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

समतापूर्ण युग में जब वह बुद्ध को बदलने में रुचि नहीं दिखाई तो या तो वे फ्रांसीसी क्रांति (1789) द्वारा उखाड़कर फेंक दी गई या स्वतंत्र भारत में कानूनों द्वारा समाप्त कर दी गई।

हमें दुनिया में अनुकूलन को बखूबी यथार्थ होते देखा है, परन्तु आज मानव परिवर्तन की प्रकृति जो प्राकृतिक भी है उससे छेड़छाड़ करने का जोखिम उठाया है जिसका परिणाम शायद अंदाज से परे होगा। जैसे- ग्रीन हाउस गैसों की सान्द्रता से प्रेरित जलवायु परिवर्तन।

प्राकृतिक परिवर्तन के संतुलन को बिगाड़ना पृथ्वी पर मानव के अनुकूलन सामर्थ्य से परे होगा क्योंकि हमें अपने सामर्थ्य व अपने अधिकार क्षेत्र के बदलाव के प्रति ही प्रतिक्रिया का सामर्थ्य रखते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्व का अर्थ भी अपने सन्दर्भ में व्यापकता को धारित करता है। जहाँ प्राचीन काल में स्व से अभिप्राय अपने कबीले, जनों, गणों के प्रति लगाव से था वहीं आज इसका सरोकार शायद समाज - राष्ट्र से होते हुए अन्तर्राष्ट्रीय महत्व पा चुका है।

यह विस्तृत स्व की भावना व्यक्ति में मूल्य प्रेरित बदलाव की माँग करती है। आज इसी स्व का अभाव है जिससे रूस ने यूक्रेन पर आक्रमण किया है। इसी स्व के अभाव ने, इसी स्व के विस्तारित अर्थ को न ग्रहण करने की भावना ने विश्व में आतंकवाद, तस्करी आदि को बढ़ावा दिया है।

आज हिंसा, बलात्कार, चोरी-लूट, अनैतिक हृास स्व की संकीर्णता

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के ही पोषक हैं जिसमें वह 'स्व' का अभिप्राय निजी वैयक्तिक सुखों को ही मानता है। यह स्वार्थ को जन्म देता है जो अशांति एवं अस्थिरता को जन्म देते हुए 'स्व' के संकीर्ण अस्तित्व को खतरे में डाल देता है।

राष्ट्रीय सन्दर्भों में 'स्व' का तात्पर्य राष्ट्र के सभी दलों, राज्यों, नागरिकों, संगठनों को अपना मानने एवं समरस विस्तार करने से है। क्योंकि राष्ट्र की मूल ईकाई उसके लोग ही होते हैं। कौटिल्य ने राजा को अपने नागरिकों के प्रति पुत्रवत् व्यवहार करने की शिक्षा दी है।

अगर आज मूल्यपरक 'स्व' के अर्थ को अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भों में लाएँ तो एक 'वैश्विक नागरिक' की अवधारणा न केवल

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

साकार प्रतीत होती दीखती है बल्कि इसका फल काफी चमत्कारी एवं संधारणीय होगा।

हमारे विश्व के ऐसे विचारकों, राजनेताओं, दार्शनिकों, महापुरुषों ने इसी 'स्व' के व्यापक अर्थ के परिप्रेक्ष्य में न केवल स्वयं के अस्तित्व की रक्षा की थी बल्कि मानव जाति के कल्याण के लिए खुद को समर्पित भी कर दिया था।

अरस्तू ने 'जहर का प्याला' केवल यह सोचकर पिया था कि आज नैतिकता बदलते परिवेश की माँग है जो ज्ञान से संचालित होगी एवं ज्ञान के साथ विवेक का पालन व्यवस्था हेतु जरूरी है। अतः उसने कहा व्यक्ति तो चले जायेंगे परन्तु विचार हमेशा अस्तित्वमान रहते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

महात्मा गाँधी जी आज भी ~~राष्ट्रपति~~ राष्ट्रपिता के रूप में हमारी स्मृतियों में ज़िंदा हैं क्योंकि उन्होंने अपने 'स्व' का विस्तार सम्पूर्ण भारत वर्ष से जोड़ लिया और हमारे देशवासियों के अस्तित्व की रक्षा करते हुए स्वयं भी हमेशा के लिए अमर हो गए।

हमें उस पक्ष पर ध्यान देना होगा जो स्वयं को बदलने की बजाए स्थितियों को बदलने की माँग करता है। आज हमें वैश्विक स्तर प्राधिकारवादी, आतंकी शक्तियों से स्वयं के अस्तित्व एवं मानवता को संरक्षित रखने हेतु अपर प्रभावी नियंत्रण, बदलाव एवं विनियमन करना होगा।

अस्तित्व उनका भी खत्म हो जाता है जो शायद बुरी प्रथाओं, आदतों,

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यवहारों के प्रति स्वयं को ढालने लगते हैं, क्योंकि यह प्रवृत्ति इन्हें बदलती नहीं बल्कि पुनः स्थिरता/हठिता की बेड़ियों में बाँध देती है।

हमारा प्रयास अपरिहार्य स्थितियों के प्रति बदलाव का समर्थक होना चाहिए। जैसे- आज प्लास्टिक प्रदूषण - मृदा, जल, समुद्री, पारितंत्र आदि के लिए घातक हो रहे हैं अतः हमें अपनी इस आदतों को बदलना होगा एवं जैव-निम्नीकरणीय विकल्पों की तरफ रुख करना होगा।

जहाँ आज हमारे सामने वैश्विक तापन जनित चरम जलवायु परिस्थितियाँ भयंकर रूप में आ खड़ी हुई हैं। जो भारी संख्या में जन-जीवन को अकाल, सूखा,

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बाढ़, चक्रवात, जलप्लावन आदि से प्रभावित कर सकती हैं वहाँ हमारा इनके प्रति शमन एवं अनुकूलन का व्यवहार ही प्रभावी होगा।

विज्ञान जो हमारे द्वार पर अवसर के रूप में है इसके गुणकारी, आधुनिकतम लाभों का प्रयोग मानव एवं मानवेत्तर प्राणियों की संधारणीयता के लिए होनी चाहिए। विज्ञान का वरदान के रूप में प्रयोग हमें प्रकृति के भी अपरिहार्य दंशों यथा - चक्रवात, उल्कापात, भूकंप आदि को झेलने के लिए भी क्षमतावान बनाएगा।

हमारा प्रयास केवल अपरिहार्य परिवर्तनों के प्रति लड़ने, निपटने एवं स्वयं में प्रतिरक्षा विकसित करने पर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

होना चाहिए न कि स्वयं मानव जनित अशिक्षा, असमानता, भेदभाव आदि के कारण उत्पन्न हिंसाओं से लड़ने हेतु।

"प्रकृति ने हमें हमारे विकास के लिए प्रचुर मात्रा में संसाधन प्रदान किया है, परन्तु यह हमारे विवेकपूर्ण दोहन पर ही सतत होगा न कि लालचपूर्ण संहार पर" गांधी जी

यह समरसता वाली मूल्य एवं जवाबदेह पूर्ण आचरण जो वैश्विक व्यवस्था के अनुरूप, नैतिक व्यवस्था से युक्त एवं मानव कल्याण के हिमायती होंगे वही इस पीढ़ी को उसी स्वरूप में आगे बढ़ाने में सक्षम होंगे जिस स्वरूप में वह इसे अपने समय में पाये थे। यही है मानव अस्तित्व की निरन्तरता का पाठ।